International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

हिन्दी उपन्यास और प्रमुख महिला उपन्यासकारों की भूमिका

डॉ. मोनिता नेमा
शासकीय संजय गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंजबासौदा

सारांश-

हिंदी उपन्यासों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है । लेखकों ने महिलाओं के अनुभवों, संघर्षों, और सशक्तिकरण को उजागर किया है, जिससे समाज मे महिलाओं की स्थिति और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। 21वीं सदी में हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासों का उल्लेख हुआ है जिसमें महिला लेखकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस सदी में महिला लेखक साहित्यिक क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराते हुए विभिन्न मुद्दों पर अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं। महिला लेखिकाएँ न केवल परंपरागत साहित्यिक रूपों को चुनौती दे रही हैं, बल्कि नई और प्रयोगात्मक लेखन शैली भी अपना रही हैं, जिससे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और ऊर्जा मिली है। उन्होंने सामाजिक मुद्दों जैसे लिंग समानता, महिला सशक्तिकरण, और शिक्षा के महत्व को अपने लेखन में प्रमुखता से उठाया है। उनकी रचनाओं में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, व्यक्तिगत संघर्ष, और स्वतंत्रता की खोज को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इन योगदानों ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन और जागरूकता को भी प्रेरित किया है। हिंदी उपन्यासों में महिलाओं की भूमिका का विकास एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। लेखिकाओं ने न केवल महिलाओं की समस्याओं को उजागर किया है, बल्कि उनके सशक्तिकरण और समानता के लिए भी आवाज उठाई है

मूल शब्द- सषक्तिकरण, हिन्दी साहित्य, जागरूकता, सामाजिक मुद्दे

प्रस्तावना-

साहित्य की एक ऐसी विधा है जो समाज को प्रस्तुत करने का सबसे प्रबल माध्यम है, क्योंकि इसका सीधा संबंध मानव समुदाय से होता है और इस संबंध की पृष्ठभूमि में उपन्यास उभरते हैं, समाज विशेष के सांस्कृतिक मूल्य जीवन और उपन्यास के अटूट संबंधों को लक्ष्य करते हुए डॉ. श्याम सुन्दर दास ने उपन्यास को मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा कहा है। उपन्यास की निम्नलिखित परिभाषा उक्त सूत्र पर प्रकाश डालती है- नॉबिल नाम साहित्य में समकालीन अथवा आधुनिक जीवन के निरीक्षण पर आधारित आचार-विचार के अध्ययन को प्रदान किया गया है। इसमें पात्र, घटनायें, षडयंत्र काल्पनिक होते हैं। तभी यह पाठक के लिए नवीन है किन्तु इसकी नींव वास्तविक इतिहास की समानान्तर रेखाओं पर ही रहती है।

नॉबिल शब्द का तात्पर्य अनुभव की सहज, स्वाभाविक स्थिति के निर्वाह से है। नॉबिल एक श्रृंखलाबद्ध कहानी है। यह कहानी वास्तव में ऐतिहासिक रूप से सत्य नहीं है किन्तु वैसी सहज ही हो सकती है। यहां काल्पनिक का तात्पर्य कल्पना से नहीं वरन् घटना के ठेठ सत्य के शुष्क बंधनों के छुटकारे से है। उपन्यास मानव और उसके जीवन के निकट रहता है। उपन्यास घटना में मात्र सत्य से नहीं बंधता वरन् उसकी संगति और संभावना से अधिक नियंत्रित रहता है।

हिन्दी उपन्यास और प्रमुख महिला उपन्यासकार-

इसी तथ्य को स्पष्ट करने के हेतु किसी की अत्युक्ति है कथा में नामों तथा तिथियों के अतिरिक्त सब बातें सच होती हैं और इतिहास में नामों तथा तिथियों के अतिरिक्त कुछ भी सच नहीं होता। अतः उपन्यास, कार्य-कारण

श्रृंखला में बंधा हुआ एक गद्य कथानक है। ष्इस विस्तृत पैचीदा कथा में जीवन के प्रतिनिधित्व प्राणियों से संबंध रखने वाली वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा जीवन के सत्य का सजीव उद्घाटन रहता है।

उपन्यास की व्युत्पत्ति मूलक परिभाषा इस तरह से की जा सकती है- उप समीप, न्यास पास रखी हुई वस्तु रखना। अर्थात उपन्यास ऐसी कृति को कहेंगे जो हमें जीबन के निकट प्रतीत हो। न्यास शब्द के रसना अर्थ से स्पष्ट है उपन्यास उस कृति को कहेंगे जिसके द्वारा लेखक जीवन के बारे में अपने भाव-विचार पाठकों के पास रखता है। जीवन का कथात्मक रूप पास रखने वाली कृति उपन्यास है। यद्यपि यह शब्द पुरानी परम्पर के अनुकूल नहीं पड़ता तथापि ष्उसका प्रयोग उपन्यास की विशिष्ट प्रकृति के साथ बिल्कुल बेमेल नहीं कहा जा सकता।

प्रायः हर युग के प्रमुख उपन्यासकारों के द्वारा उपन्यास की अलग-अलग परिभाषायें दी हैं जो कि युगानुरूप उपन्यास की परिवर्तनशीलता की परिचायक हैं। अपनी विकासावधि की विभिन्न अवस्थाओं में उपन्यास ने इतने साहित्यकारों का स्वयं में संविलय किया है कि वह प्रायः सभी कुछ होता हुआ भी उपन्यास है किन्तु और कोई उपन्यास नहीं। अतएव जिस किसी ने भी उपन्यास को परिभाषित करने का साहस किया है वह हारा है। क्योंकि समय से सभी कोई हारते हैं और उपन्यास समय का साथ देने वाला गतिधर्मा-युगधर्मा साहित्य है।

हिन्दी उपन्यास और प्रमुख महिला उपन्यासकार

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र के अनुसार मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूं। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

उपन्यास को तीन युगों में बांटकर सहजता से समझाया जा सकता है -

1. प्रेमचंद पूर्व युग सन् 1882 से 1918 तक

2. प्रेमचंद युग सन् 1918 से 1936 तक

3. प्रेमचन्दोत्तर युग सन् 1936 से आज तक

प्रेमचंद पूर्व युग इस युग को उपन्यास का शैशव काल कहा जा सकता है। इस काल में एक प्रबल साहित्यिक विधा के रूप में उपन्यास का आरंभ हो रहा था। इस युग में लाला श्रीनिवास दास का ष्परीक्षा गुरूष् प्रथम औपन्यासिक कृति है। वैसे तो इससे पूर्व भी औपन्यासिक रचनायें सम्भव हुई किन्तु परीक्षा गुरू प्रथम मौलिक रचना मानी जाती है। परीक्षा गुरू के पूर्व मौलिक रचनाएँ न होकर बांग्ला, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि साहित्य के उपन्यासों के अनुवादों का दौर चला था। इस युग में अनुदित उपन्यासों की संख्या अधिक है। इस समय के उपन्यासों की विभिन्न शैलियों, आख्यायिका, गद्य-पद्य मिश्रित शैली तथा संवादात्मक आदि में लिखी गई हैं।

हिन्दी उपन्यास और प्रमुख महिला उपन्यासकार

पहले प्रकार के उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी प्रमुख हैं। गोस्वामी जी ने मानवीय प्रेम के विविध पक्षों के उद्घाटन में ही अपनी शक्ति का अपव्यय किया। इस प्रकार के उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी का त्रिवेणी लाला श्री निवासदास का परीक्षा गुरू प्रमुख है। दूसरे क्रम में उपन्यास सूजन के नाम पर मनोरंजन प्रधान तिलिस्मी ऐय्यारी एवं जासूसी उपन्यासों की भरमार हुई जिसमें सस्ती अभिव्यक्ति एवं अश्लीलता का मुक्त प्रदर्शन हुआ। तिलिस्मी उपन्यासों में नरेन्द्र मोहनी, श्अंगूठी बेगम, भूतनाथ, चन्द्राकान्ता सन्तति प्रसिद्ध हैं।

प्रेमचन्द्र पूर्व युग के साहित्यकारों ने अपने साहित्य सूजन का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही रखा परन्तु तत्कालीन उपन्यासकार विवश थे क्योंकि रीतिकाल से सजावट रंगमंच से कथोपकथनों में चुस्ती, शायरी से रंगीनी और संस्कृत से वर्णन इन काल में व्याप्त हो गया था। प्रेमचन्द्र पूर्व युग की विशेषता बताते हुए महेन्द्र चतुर्वेदी लिखते

हैं कि ष्इस युग में एक ओर उसमें अर्निबन्ध कल्पना का अत्याधिक विलास है, तो दूसरी ओर उसमें सतही बुद्धि की शुष्क क्रीड़ा। इस युग का अधिकांश कृतित्व साहित्य की आधारभूत शर्त आत्मभिव्यक्ति की पूर्ति नहीं करता इसीलिए वह प्राणहीन है। प्रारंभिक उपन्यासों में भले ही कुछ कमिया हैं किन्तु सामाजिक परम्परा एवं रूढ़िग्रस्त दुष्प्रवृतियों का विरोध करने का साहस इसी युग की देन है।

प्रेमचन्द्र युग (1918 से 1936 तक)

हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्धि प्रदान करने का श्रेय इसी युग को जाता है और अगर इस युग का समस्त श्रेय प्रेमचन्द को दिया जाये तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। इस काल में मौलिक उपन्यास लिखने का आरंभ हुआ। प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट कहा जाता है उनकी प्रथम औपन्यासिक कृति है मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में समाज के सभी वर्गों का चित्रण किया है- पूंजीपतियों से लेकर मजदूर एवं किसान तक की यथार्थ स्थिति को साहस के साथ व्यक्त किया है। साथ ही उनकी आन्तरिक मनोवृत्तियों को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। स्वतंत्रता संग्राम में भी प्रेमचन्द की लेखकीय भूमिका रही है। वे ऐसे चितेरे थे कि जिन्होंने अपनी कुची से समूची भारतीयता को उकेरा है। कदाचित प्रेमचन्द के बाद आज तक हिन्दी में कोई ऐसा उपन्यासकार नहीं हुआ जो इतनी समग्रता के साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक परिवेश में हमें जोड़े रखें।

इस युग के उपन्यासों में कथानक को प्रभावाशाली रूप में संगठित रखने का प्रयास किया गया। नये-नये विषय उठाये गये। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न वर्गों की समस्याओं को कथावस्तु का आधार बनाया गया।

प्रेमचन्दोत्तर युग 1936 से आज तक

1950 से 1960 तक के उपन्यास और साठोत्तरी उपन्यासों का पहला दशक मुख्यतः फ्राइड और मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित है। दूसरे दशक में प्रयोगात्मक विशेषताओं से तथा तीसरा दशक आधुनिकतावादी विचारधारा से प्रभावित रहा है। वर्तमान काल में उपन्यास गद्य की सबसे सशक्त विधा है क्योंकि इसमें आधुनिक काल की विशेषतायें पाई जाती हैं। आधुनिक उपन्यासों के बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन का मत है कि ष्मनुष्य के जीवन की झांकी और उसके चरित्र की विविध परिस्थितियों में प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का जितना सफल उद्घाटन इस साहित्य माध्यम द्वारा किया जा सकता है उतना अन्य साहित्य विधाओं द्वारा नहीं।

प्रेमचन्द्र ने इस युग को यथार्थवादी दृष्टि तथा शैली में नूतन प्रतिमान दिये जिसके अनुकरण पर अनेक उपन्यासकारों ने प्रगतिशीलता की ओर अपने कदम बढ़ाये। इस युग के प्रतिनिधि उपन्यासकारों ने उपन्यास साहित्य के नए आयाम देते हुए भावी पीढ़ी का दिशा निर्देशन भी किया। इस युग के उपन्यासकारों में जैनेन्द्र राजकमल प्रकशन नई अज्ञेय, इलाचन्द जोशी, यशपाल, रामेश्वर शुक्ल, अंचल, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, अमृतलाल नागर, नार्गाजुन, फणीश्वरनाथ रेणु, अमृत राय, धर्मवीर भारती आदि।

प्रमुख महिला उपन्यासकार

प्रेमचन्द पूर्व व प्रेमचन्द्र काल में कोई महिला उपन्यासकार देखने को नहीं मिलती, किन्तु प्रेमचन्दोत्तर काल में पर्याप्त महिला लेखिकायें उपन्यास लेखन में आगे आई। इस काल की महिला उपन्यासकारों में निम्न लिखित नाम प्रमुख रूप से हैं (1) मन्नू भंडारी (2) ममता कालिया (3) मैत्रेयी पुष्पा (4) कृष्णा सोबती (5) उपा प्रियंवदा (6) मणि मधुकर (7) मृदुला गर्ग (8) निरूपमा सोवती (9) चित्रा मुदगल (10) शिवानी (11) मेहरून्निसा परवेज (12) अलका सरावगी आदि महिला उपन्यासकारों ने समकालीन उपन्यास लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

उपसंहार-

शिक्षा के प्रसार से मध्यवर्गीय समाज की नारी में जागृति आई, पुरूष के अत्याचार के प्रति सचेत होने पर वह स्वावलम्बी बनने की सोचने लगी। मध्यवर्ग में बच्चों को यथासम्भव उच्च शिक्षा दिलाने की महत्वकांक्षा रहती है, इसलिए शिक्षा का प्रसार बहुत हुआ है। इस तरह से उपरोक्त महिला लेखिकाओं ने उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में विशेष योगदान दिया है। आधुनिक युग की महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं में नारी के परम्परागत स्वरूप को त्याग कर बदलते हुए परिवेश के अनुसार क्रांतिकारी ढंग से परिवर्तन किया है। साथ ही हिन्दी को नयी दृष्टि, नया विचार, नया शिल्प, नये प्रतिमानों से समृद्ध किया है।

उपरोक्त सभी महिला लेखिकाओं द्वारा लिखी गई रचनाओं पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शोभाडे, ममता कालिया जैसे कुछ अपवादों को छोड़कर आज भी महिला लेखिकाओं की कथा का धरातल पारिवारिक जीवन के दायरे तक ही सीमित है, किन्तु फिर भी परंपरागत संस्कारों और नयी मानसिकता के द्वन्दों के बीच घुटती हुई मध्यवर्गीय नारी के जीवन की वास्तविकता का अत्यन्त सजीव व प्रमाणिक चित्र इन कथा लेखिकाओं ने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची

1. साहित्यालोचन पृ. 147
2. दि इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका 19 वॉ भाग पृ. 833
3. उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा (1960) के प्रकाशित उपन्यासकारों का आलोचनात्मक विवेचन डॉ. शशिभूषण सिंहल पृ. 16 विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।
4. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी डॉ. रेखा कुलकर्णी, (1994) चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 32-33
5. साहित्य सन्देश डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी आलेख, (1995) साहित्य सन्देश उपन्यास अंक अक्टूबर-नवम्बर, पृ. 42
6. Reading a Noval & Allen Walter & P- 13 PhooniÛ House Ltd-London&1956
7. प्रेमचन्द्र कुछ विचार- वर्तमान संस्करण (1961), सरस्वती प्रेस इलाहाबाद पृ. 47
8. हिन्दी उपन्यास प्रेम व जीवन डॉ. शान्ति भारद्वाज (1969) सुशील प्रकाशन अजमेर प्रथम सस्करण पृ. 21
9. प्रेमचन्द्र पूर्व हिन्दी उपन्यास डॉ. कैलाश प्रकाश (1962) हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली पृ. 74
10. हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण महेन्द्र चतुर्वेदी (1962) नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, पृ.24
11. मध्यकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. डालीलाल (1989) साहित्यवाणी इलाहाबाद प्रथम संस्करण, पृ. 9
12. हिन्दी उपन्यास कला डॉ. प्रतापनारायण टंडन (1990), हिन्दी समिति सूचना विभाग लखनऊ
1. पृ. 21
2. 13 आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास, डॉ. पारूकांत देसाई, (1994) चितन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण, जून पृ. 49
13. महीप सिंह महिला कथाकार (1980) विशेषांक अंक 5 जून ।
14. दिनेश द्विवेदी संचेतना संध्या (2004) छाया अंक 4 दिसम्बर, प्रकाशन मार्च 06 सं. पृ. 12